मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

फरवरी २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक ०२

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

११वां अधिवेशन सम्बलपुर शाखा के आतिथ्य में दिनांक ३१ जनवरी २००६ को संपन्न

उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा, श्री जयनारायण मिश्र, मुख्य अतिथि, (उड़ीसा राज्य वाणिज्य एवं परिवहन मंत्री), श्री सुरेन्द्र लाठ, उड़ीसा राज्य अध्यक्ष, श्री जितेन्द्र गुप्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष, मारवाड़ी युवा मंच, श्री सतपाल मित्तल, स्वागताध्यक्ष, श्री इंदरलाल अग्रवाल, शाखा अध्यक्ष सम्बलपुर एवं श्री राम अवतार पोद्दार, महामंत्री

विशेषः

- बुरा न मानो होली है! उपाधियों का मुक्तहस्त वितरण पृष्ठः१२-१७
- रंग,गीत एवं जीत का त्योहार होली अध्यक्षीय पृष्ठः५
- श्रद्धेय बसंत कुमार जी बिड़ला एवं आदरणीया डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला को भामाशाह सेवा सम्मान से विभूषित पृष्ठः ७
- पद्म विभूषण महाश्वेता देवी से मुलाकात पृष्ठः ११

पद्म विभूषण महाश्वेता देवी
के सान्निध्य में समाज विकास

होली की शुभकामनाएँ

Insync with Nature...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exporters

(A Pioneer House for Minerals)

* **IRON ORE -** BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES
* **MANGANESE ORE -** BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES
* **LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE**

:: CORPORATE OFFICE ::

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA-833201, JHARKHAND

Phone : 06582-256561/256761/25661 Fax : 91-6582-256442

Email : rungtas@satyam.net.in, Web Site : www.rungtamines.com; GRAM : "RUNGTA"

:: CENTRAL MINES OFFICE ::

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL - 758035, DIST.-KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone : 06767-275221/277481/441; Fax : 91-6767-276161; GRAM : 'RUNGTA"

:: REGISTERED OFFICE ::

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI

KOLKATA-700017, INDIA

Phone : 033-2281 6580/3751; Fax : 91-33-2281 5380; Email : rungta_cal@sify.com

समाज विकास

फरवरी २००९ ✦ वर्ष ५९ ✦ अंक ०२ ✦ एक प्रति-१० रु. ✦ वार्षिक-१०० रु.

संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
अध्यक्षीय	५
सम्पादकीय	६
भामाशाह सेवा सम्मान	७–८
उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन	९–१०
महाश्वेता देवी से मुलाकात – शम्भु चौधरी	११
बुरा न मानो होली है	१२–१७
शिक्षा में संस्कार चाहिए – मुकुन्ददास माहेश्वरी	१८
अपने समाज पर गर्व होता है – बजरंग लाल तुलस्यान	१९
६६ सालों में सिर्फ सौ राजस्थानी फिल्में	२१
मातृभाषा की मान्यता से होगा संस्कृति का संरक्षण–डॉ. राजेश कुमार व्यास	२५–२६
डॉ. पूर्णिमा केडिया को राधाकृष्ण सम्मान	२७
गाकर जी लेता हूँ : पं. जसराज	२८
कविताएँ :	
सूनी हवेली – डॉ. एस. आर. टेलर	१७
तलाक का बढ़ता ग्राफ – कु० पूर्णिमा पाण्डा 'पूनम'	२०
शादी में कुछ नहीं चाहिये – डॉ. गीता अग्रवाल	२०
राम जी का झूलन – श्री कृष्ण अग्रवाल 'मंगल' कोलकाता	२२
गोविका – रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	२२
उजले सपने बहें – मधुर राज'मुरादाबादी'	२३
मैं नेता हूँ – डॉ. मंगलाप्रसाद	२३
बुफे डिनर – राधेश्याम पोद्दार	२४
क्या कहें – सुन्दरम बंगला	२४
युगपथ चरण:	२९–३४

समाज विकास अप्रैल माह से नई सदस्यता सूची के अनुसार प्रेषित की जायेगी। सभी प्रांतों से अनुरोध है कि वे अपने प्रान्त की सदस्यता सूची हमें भेजने की कृपा करें।

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ E-mail :samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा ऐंबल प्रिंटर्स प्रा.लि.
४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

परिचर्चाः 'कल आज और हम'

आपके द्वारा सुसम्पादित 'समाज विकास' हर माह की तरह दिसम्बर ०८ का भी मिला। देख पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। वैसे तो 'समाज विकास' के प्रत्येक अंक पठनीय एवं मननीय होते हैं, पर यह अंक तो अनेक विशेषताओं से पूर्ण है।

प्रेरक पुरुष ''श्री भँवरमलजी सिंघी समाज सेवा पुरस्कार'' समाज सेवी श्री पुरुषोत्तमलालजी केडिया को, राजस्थानी भाषा साहित्य पुरस्कार २००८, रचना धर्मी श्री ओंकार श्री को। मानद निर्णायक महोदयों को धन्यवाद एवं पुरस्कार विजेता महानुभावों को बधाई।

'समाज' के इस अंक की परिचर्चा:' कल आज और हम' वस्तुत: मारवाड़ी समाज के अतीत को गौरव गाथा एवं वर्तमान के आशामय सोच से सुधी पाठकों को अवगत करवाया गया है। परिचर्चा के समस्त विद्वान लेखकों ने स्व विवेक एवं गहन अनुभूति से मारवाड़ी युवकों को प्रशस्त मार्ग का दिग्दर्शन करवाया है। वह सराहनीय ही नहीं अपितु अनुकरणीय भी है।

श्रद्धेय श्री भँवरमलजी सिंघी एवं उनके अनुज के साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध रहें हैं। परिचर्चा के अधिकांश सहभागियों से मेरा घनिष्ट परिचय है। मैं ८५ वर्षीय हूँ। मेरे समकालीन विद्वानों से यथा सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री नथमलजी केडिया का आशीर्वाद प्राप्त है। 'धरती धोरा रीं' के गायक पद्मश्री कन्हैयालालजी सेठिया तो मुझे अनुज के सदृश मानते रहे।

- वैद्यनाथ पंवार, वार्ड नं. १८, चूरू

बधाई .....

समाज विकास दिसम्बर २००८ का अंक पढ़ा। इसमें अच्छे लेख पढ़ने को मिलें। लेख समाज के हित में हैं। समाज ने जहाँ उन्नती की वहीं साथ–साथ समाज में खामियां भी है। इसका उल्लेख है। श्री सीताराम जी का लेख अनुकरणीय है। २१वें राष्ट्रीय अधिवेशन में महामंत्री की रिपोर्ट पढ़कर बहुत कुछ जानकारी मिली। नव निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलालजी रूँगटा की भी जानकारी मिली। उन्हें बधाई है। अध्यक्ष महोदय एवं महामंत्री को सभी का सहयोग रहेगा तो समाज बहुत तरक्की कर सकता है।

-किशनगोपाल पुरोहित
प्रथम तल्ला, एफ.ओ.-१, अमरज्योति पैलेस,
वरधा रोड धनटोली,
नागपुर-४४००१२ (महाराष्ट्र)

अंक संग्रहणीय दस्तावेज

'समाज विकास' दिसम्बर २००८ का अंक भेजने हेतु अनेक धन्यवाद! अंक लुभावना है। इसमें सम्मेलन के २१वें राष्ट्रीय अधिवेशन एवं ७४ वें स्थापना दिवस समारोह की विशेष सामग्री संग्रहीत है। इस विराट आयोजन को सफ़लता पूर्वक मंचित करने हेतु केन्द्रीय संगठन एवं प्रान्तीय सम्मेलन के सभी समाज बंधु बधाई के पात्र हैं। आयोजनधर्मियों में मारवाड़ियों की तुलना में कोई शायद ही खड़ा हो।

संपादक महोदय ने ***''कल, आज और हम''*** एक शानदार परिचर्चा का संपादन किया। इसमें लगभग ३० हस्तियां हैं। प्रत्येक अपने आप में विशिष्ट, वैचारिक स्तर पर गणनीय। अलग–अलग पेशे से जुड़े लोग। मगर चिन्तन की विभिन्न धाराएँ समाज सागर में निमज्जित, सामाजिक सरोकारों से सम्बन्धित। सभी समाज का कल्याण चाहते हैं। कुछ का अपनी वाणी में युवकोचित आक्रोश एवं छटपटाहट भी है, मगर वह भी उपकार हेतु! सामाजिक संक्रमणकाल के इस भूमण्डली करण के दौर में आदर्शों, मूल्यों, परम्पराओं आदि में चूड़ांत परिवर्तन होगा। परिवर्तन की अंधी बयार में युवा समाज बड़ी तेजी के साथ छलांगे लगाना चाहता है, सो कोई खराब बात नहीं है। पैसा, शोहरत, सत्ता प्राप्ति के पीछे व्यैक्तिक उच्चकांक्षाएँ हैं, जो प्रतिस्पर्द्धा के इस मोबाइल युग में मोबाइल (गतिमान) हैं, यह मोबिलिटी (गतिशीलता) ही क्वान्टिटी से क्वालिटी में तब्दील होगी। तब ठहराव आएगा। इस भावी का अंदाजा नंदकिशोर जी ने अपने खट्टे–मीठे अनुभव से लिया है। हर अस्तित्व आपका यह अंक संग्रहणीय दस्तावेज है। आप इन्हें लेकर एक लघु पुस्तिका भी सम्मेलन से प्रकाशित कर सकते हैं। उम्दा काम हो जाएगा। मैं सभी हस्ताक्षरों को नमन करता हूँ। समाज शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से भी यह अंक पठनीय है। बधाई एवं शुभकामनाएं।

- केसरीकान्त शर्मा 'केसरी'
आनन्दपुरा, वार्ड नं0 १,
मण्डावा-३३३७०४, जिला - झुंझनू (राज.)

अध्यक्षीय:

रंग, गीत एवं प्रीत का त्योहार - होली

- नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष

होली वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय त्योहार है। यह पर्व पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों का त्योहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन, जिसे छारण्डी, घुरण्डी, धुलेंडी, धुरखेल या धूलिवंदन कहा जाता है, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर–गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं। घर–घर में जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन हम अपनी कटुता को भूल कर समाज के कल्याण के लिये एकजूट होते हैं। पुरानी कटुता को भुलाकर फिर से दोस्त बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने–बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। होली खेलने के पश्चात दिन में स्नान व विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को हमलोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, मित्रों से गले मिलते हैं और बुजुर्ग से आशीर्वाद लेते हैं।

राग–रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग–बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का हृदय खुशी से नाच उठता है। बच्चे–बूढ़े सभीव्यक्ति सबकुछ संकोच और रूढ़ियाँ भूलकर ढोलक–झाँझ–मंजीरों की धुन के साथ नृत्य–संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। रंग के इस त्योहार को आज हम भूलते जा रहें हैं हमारी राजस्थानी संस्कृति की धरोहर इस त्योहार से हम अपना मुँह यह कहकर छुपा लेंते हैं कि ***"रंग लाग जासी"*** मेरी तो सोच है कि ***"आपाण अईंयां को रंग लगाणो चाहिजे कि साल भर वो रंग नहीं छुटे।"***

एक कवि हृदय आपरी कविता में लिख्यो है कि–

"लाल, गुलाबी, नीला, पीला .... हरा नहीं हो यार
रंग बने कुछ ऐसा जो
तन को नहीं मन को छू सके।"

होली के इस पर्व पर सम्मेलन की तरफ से सभी समाज बंधुओं से मेरी प्रार्थना रहेगी कि हम अपनी कटुता को भूलाकर सम्मेलन की मुख्यधारा से जुड़ें। कोलकाता ने सम्मेलन को हमेशा से नई ऊर्जा दी है जिसका देश के अन्य भागों में समाज के द्वारा अनुसरण किया जाता रहा है। होली के इस अवसर पर मेरी सभी वर्ग से यह प्रार्थना होगी कि हम अपने आपको स्थापित करने के अहम से अलग होकर, अपने कार्य को स्थापित करने का प्रयास करें। जिससे सम्मेलन के उद्देश्यों को हमसब मिलकर कार्यान्वित कर सकें।

होली के इस पावन अवसर पर सम्मेलन की तरफ से आप सभी को बहुत सारी शुभकामनाएँ।

सम्पादकीय:

बंग्ला संस्कृति

आज देश के सामने सबसे बड़ा खतरा संकीर्ण और असहिष्णु सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है। कहीं पर भारतीय संस्कृति को बचाने के नाम पर पबों में हमला हो रहा है तो, कहीं धर्म के ठेकेदार भारतीय संस्कृति की रक्षा के नाम पर भारतीय सांस्कृति को ही बदनाम करने में लगे हैं। कहीं सत्ता के ठेकेदार अपने राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति करने के लिए जातीय विद्वेष फैलाने के कार्य में लिप्त हैं, तो कहीं भाषा को लेकर जहर के बीज रोपे जा रहे हैं। मजे की बात यह है कि ये सब के सब इस देश में फल-फूल रहे हैं।

दूसरी तरफ सारा विश्व आतंकवाद का शिकार बनता जा रहा है। कुछ लोग इसे जेहाद की संज्ञा देने से भी नहीं चूकते। इन ठेकेदारों ने जहाँ एक तरफ देश की संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया है वहीं धर्म प्रायोजित आतंकवाद के कई शब्दों को नये तरह से व्याख्यायित किया है।

तीसरी तरफ विश्व आर्थिक मंदी का ग्रास बना हुआ है, खनिज संपदा में आयी एकतरफ तेजी ने कुएँ में डुबकी लगाना शुरू कर दिया। जिन वित्तीय संस्थाओं ने विश्व के कई देशों को आर्थिक संकट से कई बार उबारा, आज उन संस्थाओं ने अपने आपको दिवालिया घोषित कर दिया। जबकि भारतीय वित्तीय संस्थाओं ने इस संकट को बड़ी सावधानी से झेला। लगभग सभी संस्थाएँ पुनः सक्रिय होकर वित्तीय कारोबार करने लगी हैं।

इन सबके बाबजूद न तो कहीं से भारतीय संस्कृति कमजोर हुई है न ही किसी भाषा को कोई क्षति ही हुई है। इन दिनों कोलकाता शहर की दुकानों में बंगला भाषा के साइनबोर्ड न रहने पर कोलकाता नगर निगम ने एक अभियान के तहत अबंगाली साइनबोर्डों को हटाने का अभियान चला रखा है। शहर के हिन्दी भाषा-भाषी वर्ग को निशाना बनाकर यह अभियान चलाया जा रहा है। जबकि सारा शहर अंग्रेजी विज्ञापनों से पटा हुआ है। सड़कों के चारों तरफ होर्ड़िंग-साइनबोर्ड़-ग्लोसाइन का राज हो रखा है। जिसके चलते आस-पास की हरियाली को दफ़ना दिया जाता है। शायद इनकी नजर इन ''होर्ड़िंग-साइनबोर्ड़-ग्लोसाइन'' पर नहीं है या इसका नियत्रंण करना इनका कार्य नहीं है।

बंगाल में श्री ज्योति बसु ने कभी भी 'आमरा बंगाली' या इस तरह की प्रवृति को नहीं पनपने दिया न ही इनके २५ वर्षीय स्वर्णिम कार्यकाल में किन्हीं सांप्रदायिक ताकतों ने सर उठाने की जुर्रत की। वहीं नगर निगम के इस कदम से 'आमरा बंगाली' जैसे तत्त्वों को काफी बल मिलेगा साथ ही बंगला भाषा को सम्मान दिलाने का यह रास्ता बंगाल की संस्कृति को नष्ट कर देगा।

शस्य-श्यामला धरती जहाँ रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द का जन्म हुआ हो, जहाँ रवीन्द्र नाथ ठाकुर, अमर्त्य सेन, मदर टेरेसा ने इसको विश्व के शिखर पर पहुंचाया। जहाँ महाश्वेता देवी वास करती हो। जिस शहर ने विश्वभर के साहित्यकारों को ख्याति प्रदान की हो, ऐसे शहर में इस तरह की मानसिकता का पनपना खेदजनक, ही नहीं आपत्तिजनक भी है।

इस तरह की मानसिकता से बंगला भाषा या किसी भी प्रान्तीय भाषाओं को कभी भी न तो कोई फायदा हुआ है न कभी इससे भाषा समृद्ध ही होगी। यदि बंगला भाषा से सच में लगाव ही है तो बंगला साहित्य के अनमोल खजाने को देश की अन्य राष्ट्रीय भाषाओं में रूपान्तरण करवा के बंगला साहित्यकारों के साहित्य को नया आयाम दें। इसी में हम सबका हित भी है और बंगाल की अनमोल संस्कृति को नष्ट होने से बचाया भी जा सकता है।

- शम्भु चौधरी

भामाशाह सेवा सम्मान श्रद्धेय बसंत कुमार जी बिड़ला एवं आदरणीया डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला को

श्रद्धेय बसंत कुमार जी बिड़ला एवं आदरणीया डॉ. श्रीमती सरला बिड़ला को भामाशाह सेवा सम्मान से विभूषित करने हेतु रविवार ८ फरवरी २००९ को ज्ञानमंच, कोलकाता में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता श्री सीताराम शर्मा, पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का वक्तव्य

बिड़ला परिवार का देश, विशेषकर मारवाड़ी समाज में सदैव एक विशिष्ट स्थान रहा है। इस महान परिवार का देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान सर्वविदित है। लेकिन बिड़ला परिवार का देश की स्वतंत्रता, राजनीति एवं सामाजिक परिवर्तन में अभूतपूर्व योगदान का सही मूल्यांकन कभी नहीं हुआ। मारवाड़ी समाज अपने नायकों (हीरोज) चाहे वे श्री घनश्याम दास बिड़ला हों या डॉ. राम मनोहर लोहिया को उचित सम्मान एवं सही मान्यता देने में सदैव पीछे रहा है।

जी.डी. बाबू का देश की स्वतंत्रता में योगदान, गांधीजी को आर्थिक सहयोग तक ही सीमित नहीं था। गाँधीजी के साथ अपने तीस वर्षों से अधिक के गहरे रिश्तों के दौरान गाँधीजी एवं ब्रिटिश सरकार एवं राजनेताओं के बीच जो महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में संबंधों एवं समझ को स्थापित एवं विकसित कर एक कूटनीतिक एवं राजनैतिक सफलता अर्जित की उसका ऐतिहासिक महत्व रहा है। जी.डी. बाबू को निश्चित रूप से Track-2 Diplomacy का भारतीय जनक कहा जा सकता है।

स्वतंत्रता के उपरांत भी श्री बिड़ला ने, ब्रिटेन एवं भारत के बीच मित्रतापूर्ण एवं गहरे आर्थिक संबंध स्थापित करने, कॉमनवेल्थ की सदस्यता तथा कश्मीर के सवाल पर भारतीय पक्ष को ब्रिटिश सरकार, राजनेताओं एवं शीर्ष पत्रकारों के सम्मुख प्रस्तुत करने में सरदार पटेल के माध्यम से एक अति गंभीर एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्री खुशवन्त सिंह ने सही कहा था – "In those days G.D. was either defending Englishmen before Bapu or Bapu before Englishmen."

एक २१ वर्षीय साधारण शिक्षित मारवाड़ी १९१६ में पहली बार गांधी जी से मिलते हैं एवं केवल ८ वर्षों के सम्पर्क के पश्चात बापू घनश्यामदास जी को लिखते है – "God has given me mentors and I regard you as one of them" राष्ट्रपिता के हाथों इस महान व्यक्ति की प्रतिबद्धता, क्षमता एवं योग्यता के लिए एक अदभुत प्रमाण पत्र था।

बिड़ला परिवार सदैव प्रगतिशील, आधुनिक एवं सुधारक विचारवादी का रहा। १९०० के आसपास का मारवाड़ी समाज सनातनी एवं सुधारक – दो भागों में विभक्त था। बिड़ला परिवार को भी जाति से वहिष्कृत होना पड़ा था। जी.डी. इस अनुचित निर्णय का खुलकर एवं डटकर विरोध करना चाहते थे। वे गाँधीजी की अहिंसा की नीति का भी इस विषय में पालन करने में अपने आप को असमर्थ पा रहे थे। लेकिन गांधीजी के समझाने पर उन्होंने टकराव का पथ त्याग दिया। श्री कालीप्रसाद खेतान की विदेश यात्रा के विरुद्ध बड़ा आंदोलन हुआ एवं उन्हें जातिच्युत कर दिया गया। १९१८ में श्री बृजमोहन बिड़ला के विवाह के अवसर पर उन्हें वापस जाति में सम्मिलित किया गया। लेकिन इसके लिए उन्हें तीर्थ यात्रा एवं प्रायश्चित करना पड़ा।

मारवाड़ी समाज में दो विचार धाराएँ स्पष्ट हो रही थी– एक जो सामाजिक जीवन में सुधार चाहते थे एवं दूसरे धर्म संबंधी कोई भी सुधार के लिए प्रस्तुत नहीं थे।

ऐसे समय में ही १९३५ में रायबहादुर रामदेव चोखानी के सभापतित्व में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना मारवाड़ी देशी प्रजा के राजनैतिक अधिकारों के लिए हुई। सनातनी वर्ग का इतना प्रबल प्रभाव था कि सम्मेलन को अपने आरम्भिक १०–१२ वर्षों तक समाज सुधार के क्रार्यक्रमों से दूर रखना पड़ा। १९४७ में स्वनामधन्य स्व. बृजलाल बियाणी के सभापतित्व में समाज का आह्वान करते हुए कहा कि ''अब समय आ गया है कि सम्मेलन समाज सुधार के काम में तत्परता से लग जाए। समाज के स्वरूप को बदलने का भार उस पर है।''

सम्मेलन ने बाल विवाह, पर्दा प्रथा, नारी प्रताड़ना, मृत भोज, दहेज–दिखावा आदि कुरीतियों के विरुद्ध आंदोलन किये, लाठियाँ खाई एवं बालिका शिक्षा, विधवा विवाह, सादगी आदि का समर्थन करते हुए समाज सुधार एवं समरसता का नारा दिया।

समाज में तेजी से एक बदलाव आया है। अनेक परिवर्तन हुए हैं– कुछ शुभ, कुछ अशुभ। समाज काफी सीमा तक पुरानी सामाजिक रूढ़ियों के बंधन से मुक्त हुआ है। लेकिन अंध विश्वास एवं सामाजिक कुरीतियों के जाल से हम सम्पूर्ण रूप से मुक्त नहीं हुए हैं– विशेष कर नारी समाज।

समाज शिक्षित हुआ है, लेकिन सुधार अभी बाकी है। मारवाड़ी समाज अपनी जिन खूबियों के लिए जाना जाता रहा है, उन्हें खो रहा है। संचय की प्रवृत्ति का ह्रास हुआ है एवं झूठा दिखावा एवं प्रदर्शन बढ़ रहा है। व्यवसाय में जुबान की कीमत एवं ईमानदारी में कमी आयी है। एक समय कहा जाता था ''न खाता सही न बही सही, जो मारवाड़ी कहे वही सही''। यहाँ तक कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने १९४५ में प्रकाशित अपनी पुस्तक Discovery of India में इसकी चर्चा की है – "The Marwari from Rajputana used to control internal trade and finance. They were the big financers as well as small village bankers, a noter from a well known Marwari financial house would behonoured any where in india and even abroad." ईमानदारी में कमी आयी है। टूटते परिवार, पारिवारिक अनुशासन का अभाव, बढ़ते तलाक, टूटते विवाह, बड़ों के प्रति सम्मान में लगातार कमी–हमारे सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में लगातार गिरावट आयी है।

अर्थ के बढ़ते महत्व ने नयी गम्भीर सामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। हालाँकि पैसा हमारे समाज में सदैव ही कुछ ज्यादा बोलता आया है। १९५३ में कोलकाता के मोहम्मद अली पार्क में सम्बोधित करते हुए ***सम्मेलन सभापति आदरणीय सेठ गोविन्द दास ने कहा था- ''हमें टका धर्म को अलविदा कर देना है। आज समाज की मुठ्ठी में धन नहीं, धन की मुट्ठी में समाज है। जहाँ राजस्थानी शब्द से वीर-संस्कृति की झंकार निकलती है वहाँ मारवाड़ी शब्द केवल धन संस्कृति का द्योतक रह गया है।''***

बिड़ला परिवार, मारवाड़ी समाज के लिए सदैव एक आदरणीय, आदर्श, अनुकरणीय एवं प्रेरक परिवार रहा है। गांधी जी बराबर कहा करते थे कि सामाजिक क्रांति का काम राजनैतिक क्रांति की अपेक्षा कई गुणा अधिक जटिल एवं कठिन है। सामाजिक प्रश्नों को कोई कोर्ट–कचहरी नहीं सुलझा सकती। यह सुधार समाज को स्वयं करना है एवं मेरा पूर्ण विश्वास है कि बिड़ला परिवार एवं विशेषकर आदरणीय बसन्त कुमार जी बिड़ला एवं श्रद्धेया डा. श्रीमती सरला जी बिड़ला, समाज सुधार के रथ के कृष्ण–रूपी सारथी बन समाज में शुभ परिवर्तन का श्री गणेश कर सकते हैं।

कुछ दशकों पहले तक समाज का धनिक वर्ग समाजिक कार्यों में पूरा भाग लेता था, समाज को दिशा–निर्देश प्रदान करता था, पंचायत के माध्यम से विवादों का निपटारा करता था एवं अनुचित सामाजिक कार्यों के लिए दंड भी देता था। पंचायत का भय था, समाज का डर था। परन्तु आज इस दिशा में धनिक वर्ग उदासीन है।

इस संदर्भ में एक घटना की चर्चा कर मैं अपनी वाणी को विराम दूंगा–१९१७ की बात है। कोलकाता में जोरों से चर्चा हुई कि घी में चर्बी मिलाई जाती है। समाज में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हो रहा था। मारवाड़ी एसोसियेशन, जो उस समय की सबसे महत्वपूर्ण मारवाड़ी समाज की संस्था थी (जो बाद में भारत चेम्बर ऑफ कामर्स बन गई) ने घी के व्यापारियों से पूछताछ की, सबने मिलावट की बात से इन्कार कर दिया।

एक दिन प्रातः सर्वश्री रंगलाल जी पोद्दार, सर हरिराम गोयनका, जयनारायण जी पोद्दार, राय बहादुर शिवप्रसाद झुनझुनवाला, रायबहादुर विश्वेश्वर हलवासिया, श्री दौलतराम चोखानी, रायबहादुर रामदेव चोखानी, श्री ईश्वरदास जालान की पंचायत दल बांधकर व्यापारियों के यहाँ अचानक पहुँचे एवं नमूने के घी के पीपे ले गये। मिलावट साबित हुई। पंचायत ने बहुत लोगों को जुर्माने किये एवं जाति वहिष्कृति भी कुछ समय के लिए किया। ७५०००/– रुपया जुर्माने स्वरूप प्राप्त हुए। बाद में उस धन राशि से वृन्दावन में गोचर भूमि खरीदी गयी। समाज के हाथ में जनमत की शक्ति का एवं समाज के शीर्षस्थ धनिक वर्ग की सामाजिक प्रतिबद्धता का यह अद्भुत नमूना था।

श्री बसन्त कुमार जी बिड़ला एवं श्रीमती सरला जी बिड़ला पर ईश्वर की महती कृपा रही है। उनके दिल में समाज एवं मानवता के लिए दर्द है। आज मारवाड़ी समाज उनके सामाजिक नेतृत्व के लिए आँखे बिछाये एवं हाथ पसारे खड़ा है।

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का ११वां प्रान्तीय अधिवेशन

नव निर्वाचित प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ (पूर्व राज्य-सभा सांसद) को सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रूँगटा पद्भार ग्रहण कराते हुए।

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन, उड़ीसा की ११वें अधिवेशन सम्बलपुर शाखा के आतिथ्य में दिनांक ३१.१.०९ एवं १.२.०९ को दुर्गा मंगलम् सम्बलपुर में अनुष्ठित हुआ, तथा राष्ट्रीय कार्य समिति की भी बैठक दिनांक १.२.०९ को सम्पन्न हुई। दिनांक ३१.१.०९ को संध्या ७ बजे विषय समिति की प्रान्तीय बैठक भी सम्पन्न हुई जिसमें अधिवेशन में चर्चा हेतु संगठन, सामाजिक संस्कार, समाज के द्वारा लिये जानेवाले संकल्प पत्र पर विचार विमर्श हुआ।

दिनांक १.२.०९ को समूचे प्रान्त से आये ८०० प्रतिनिधियों एवं अखिल भारतवर्षीय कार्यसमिति के सदस्यों की उपस्थिति में नव निर्वाचित प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ (पूर्व राज्य–सभा सांसद) राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा से पद्भार ग्रहण किया। उक्त उद्घाटन सत्र में श्री नन्दलाल रूँगटा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री जयनारायण मिश्र, मुख्य अतिथि (उड़ीसा राज्य वाणिज्य एवं परिवहन मंत्री) श्री सुरेन्द्र लाठ, उड़ीसा राज्य अध्यक्ष श्री जितेन्द्र गुप्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष मारवाड़ी युवा मंच, श्री सतपाल मित्तल स्वागताध्यक्ष, श्री इंदरलाल अग्रवाल शाखा अध्यक्ष सम्बलपुर, श्री राम अवतारजी पोद्दार राष्ट्रीय महा सचिव उपस्थित थे। सम्बलपुर की अधिष्ठात्री देवी माँ समलेश्वरी की पूजा के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा ने श्री सुरेन्द्र लाठ को उड़ीसा प्रान्त का अध्यक्ष पद्भार सौंपा। उड़ीसा में समाज के वरिष्ठ व्यक्तिगण श्री मदनलाल झुनझुनवाला, (सम्बलपुर), श्री मौजीराम जैन (कांटाबांजी), श्री काशी प्रसाद झुनझुनवाला (राउरकेला), श्री गजानंद अग्रवाल (कटक), (जो अस्वस्थतावश अनुपस्थित थे) को सम्मानित किया गया।

तत् पश्चात श्री नन्दलाल रूँगटा ने उपस्थित प्रतिनिधियों को अपना उद्बोधन दिया। श्री सुरेन्द्र लाठ ने सम्मेलन की नई दिशा की ओर इंगित किया। उन्होंने कहा कि सम्मेलन का कोई विकल्प नहीं है। वर्त्तमान स्थिति में इसकी उपयोगिता प्रतिपादित करते हुए उन्होंने कहा कि आज देश के चहुँओर विघटनकारी शक्तियों का बोलबाला है– ऐसे में एक हम ही हैं जो राष्ट्रीय एकता की, देश की सुरक्षा की बात करते हैं। ऐसे में हमें अपने कार्य को और भी अधिक गति देने की आवश्यकता है। मुख्य अतिथि श्री जयनारायण मिश्र ने सलाह दी की सेवा के विभिन्न प्रकल्पों को अपना कर अपनी एक पहचान दुनियाँ के सामने खड़ी कर सकते हैं। श्री जितेन्द्र गुप्ता ने कहा है कि हमें अपनी जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व नहीं मिलने का एक ही कारण है कि हम असंगठित हैं। श्री इंदरलालजी अग्रवाल के धन्यवाद के पश्चात उद्घाटन समारोह का विराम हुआ।

प्रथम सत्र :

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, बरगढ़, के संयोजकत्व में संगठन पर विषद चर्चा हुई। इस सत्र का संचालन श्री जय प्रकाश लाठ ने किया। सारे प्रांत से आये प्रतिनिधियों ने संगठन को घर–घर तक पहुँचाने का संकल्प लिया तथा उड़ीसा में रह रहे १५ लाख जनसंख्या वाले इस समाज को अपने संगठन में एक सूत्र में पिरोकर अपनी राजनैतिक पहचान बनाने पर जोर दिया गया।

दूसरा सत्र :

द्वितीय सत्र का संचालन श्री शंभु जगतरामका ने किया :–

इस सत्र में प्रतिनिधियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने एवं समाज में संस्कार लाने के विभिन्न प्रयासों की खुले हृदय से चर्चा की।

उत्कल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का 11वां प्रान्तीय अधिवेशन

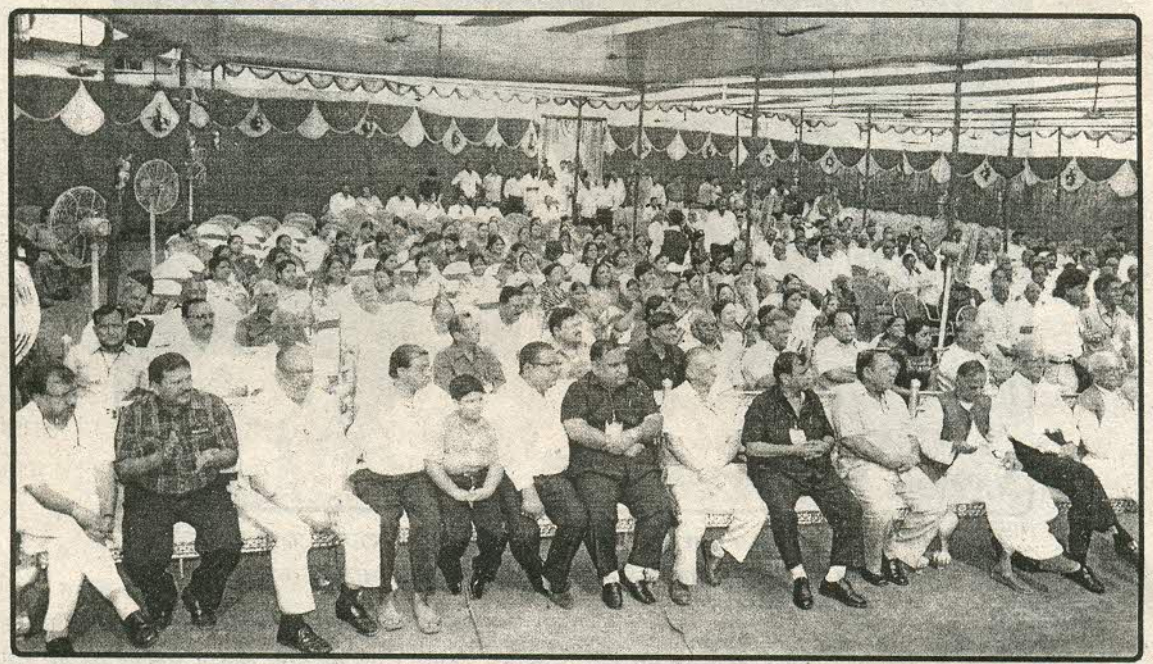

तृतीय सत्र :

इस सत्र का संचालन श्री दिनेश अग्रवाल ने किया। इस सत्र में सम्मेलन द्वारा ग्रहण किये गये। संकल्प पत्र पर विशेष रूप से चर्चा की गई। नई दिशा के विभिन्न पहलुओं को प्रतिनिधियों के सामने विचार के लिये रखा गया–एवं तत्पश्चात ग्रहण किया गया। अंत में श्री विजय केडिया के संचालन में अधिवेशन का समारोह उत्सव सम्पन्न हुआ। सम्बलपुर शाखा के अधिवेशन के आयोजन में जिन कार्यकर्त्ताओं का विशेष योगदान था उनको स्मृति भेंट कर उन्हें उत्साहित किया गया। इसी समय श्री सुरेन्द्र लाठ ने प्रान्तीय कार्यकारिणी की घोषणा की।

: प्रान्तीय कार्यकारिणी :

उपाध्यक्ष :

श्री हरिकिशन अग्रवाल, राउरकेला
श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल, बरगढ़
श्री मगनलाल अग्रवाल, बलांगीर
श्री सुभाष सितानी, ब्रजराज नगर
श्री मनसुख सेठिया, भुवनेश्वर

महासचिव :

श्री विजय कुमार केडिया, सम्बलपुर

सचिव :

श्री दिनेश अग्रवाल, सम्बलपुर
श्री सम्पत अग्रवाल, बौध
श्री ईश्वरचंद जैन, टिटिलागढ़
श्री सुरेश बोंदिया, झारसुगुड़ा

कोषाध्यक्ष :

श्री सज्जन कुमार भूत

प्रकाशन :

श्री हजारी मल ओझा

समन्वय समिति :

चेयरमैन–श्री किसन लाल भरतिया,कटक

शाखा विस्तार :

चेयरमैन–श्री द्वारका प्रसाद अग्रवाल, सम्बलपुर

योजना (प्रकल्प) :

चेयरमैन–श्री विजय कुमार टिबड़ेवाल, भूवनेश्वर

कार्यकारी सदस्यों की एवं सलाहकारों की घोषणा निकट भविष्य में की जाएगी।

अधिवेशन की समाप्ति के पश्चात एक राजस्थानी सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजन किया गया था जिसमें श्री नटवर लालजी लोहिया का विशेष योगदान था।•

मुलाकात:

पद्म विभूषण
महाश्वेता देवी से मुलाकात

महाश्वेता देवी के साथ समाज विकास के सहयोगी संपादक शम्भु चौधरी

महाश्वेता देवी एक ऐसा नाम जिसका ध्यान में आते ही उनकी कई–कई छवियाँ आंखों के सामने प्रकट हो जाती है। जिसने अपनी मेहनत व ईमानदारी के बलबूते अपने व्यक्तित्व को निखारा है। उन्होंने अपने को एक पत्रकार, लेखक, साहित्यकार और आंदोलन–धर्मी के रूप में विकसित किया। महाश्वेता देवी का जन्म सोमवार १४ जनवरी १९२६ को ईस्ट बंगाल जो भारत विभाजन के समय पूर्वी पाकिस्तान वर्तमान में (बांग्लादेश) के ढाका शहर में हुआ था। गत १३ फरवरी २००९ को मैं कोलकाता स्थित महाश्वेता देवी के घर उनसे मिलने गया। महाश्वेता जी ने अपना सारा जीवन ही मानो आदिवासियों के साथ गुजार दिया हो। जल, जंगल और जमीन की लड़ाई के संघर्ष में खर्च कर दिया हो। उन्होंने पश्चिम बंगाल की दो जनजातियों 'लोधास' और 'शबर' विशेष पर बहुत काम किया है। इन संघर्षों के दौरान पीड़ा के स्वर को महाश्वेता ने बहुत करीब से सुना और महसूस किया है।

पीड़ा के ये स्वर उनकी रचनाओं में साफ–साफ सुनाई पड़ते हैं। उनकी कुछ महत्वपूर्ण कृतियों में 'अग्निगर्भ' 'जंगल के दावेदार' और '१०८४ की मां' हैं। आपको पद्मविभूषण पुरस्कार (२००६), रैमन मैग्सेसे (१९९७), भारतीय ज्ञानपीठ(१९९६) सहित कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है। पिछले दशक में महाश्वेता देवी को कई साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आपको मैग्सेसे पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है जो एशिया महाद्विप में नोबेल पुरस्कार के समकक्ष माना जाता है।

आपने किसी पुरस्कार के लिये कार्य नहीं किया। बार–बार आदिवासी के प्रश्न पर विचलित होते इनको कई बार देखा गया। कहती हैं कि ***''हम लोग तब तक अपने आपको सभ्य नहीं कह सकते, जब तक हम आदिवासियों के जीवन को नहीं बदल देते।''*** आपने 'संथाल', 'लोधास', 'शबर' और 'मुंदास' जैसे खास आदिवासी (आदिवासी जन जाति) लोगों के जीवन को बहुत गहराई से न सिर्फ अध्ययन ही किया इन पर बहुत कुछ अपनी कथाओं में समेटने का प्रयास भी किया है, आज भी आपको ऐसे समाचार विचलित कर देतें हैं जहाँ किसी आदिवासी के ऊपर जुल्म किया जाता है। आप सदैव से सामाजिक और राजनीतिक प्रासंगिक विषयों पर अपनी कलम से प्रहार करती रहीं हैं। आप एक जगह लिखती हैं– ''एक लम्बे अरसे से मेरे भीतर जनजातीय समाज के लिए पीड़ा की जो ज्वाला धधक रही है, वह मेरी चिता के साथ ही शांत होगी.....।'' आपने अपना पूरा जीवन और साहित्य, आदिवासी और भारतीय जनजातीय समाज को समर्पित कर दिया है। इसलिए नौ कहानी संग्रह में से आठ कहानियों के केन्द्र में आदिवासी जाति केन्द्रित है, जो आज भी समाज की मुख्यधारा से कटकर जी रहा है।

लेखिका महाश्वेता देवी १४ जनवरी २००९ को ८३ वें साल की हो गई, हमने मारवाड़ी समाज की तरफ से उन्हें जन्म दिन की बधाई दी और इस अवसर पर आपको 'समाज विकास' के कुछ साहित्य विशेषांक भी भेंट किये जिसे आपने स्वीकार करते हुए कहा कि– 'खूब भालो काज कोरछो' (खूब अच्छा काम करते हो) चेहरे पर तेजस्ब की रोशनी इस तरह चमक रही थी मानो साक्षात माँ का दर्शन कर लिया हो हमने। इस अवसर पर आपने श्री केसरीकान्त शर्मा का हालचाल भी पुछा।

- शम्भु चौधरी

बुरा न मानो होली है

नन्दलाल रुँगटा : अध्यक्ष जी

श्री नन्दकिशोर जालान — भीष्म पितामह
श्री नन्दलाल रुँगटा — अध्यक्ष जी
श्री सीताराम शर्मा — खाकी वर्दी
श्री मोहनलाल तुलस्यान — आध्यात्म
श्री हरिशंकर सिंघानिया — कर्मयोगी
श्री हनुमान प्रसाद सरावगी — स्वास्तिक
श्री रतन शाह — म्हारी मारवाड़ी
श्री हरि प्रसाद कानोड़िया — पांचों अंगुली घी में
श्री राज के पुरोहित (मुम्बई) — सांसद की तैयारी

गाँव के एक सरपंच ने वाटर सप्लाई के अफसर से शिकायत की कि, हमारे गाँव में कई दिनों से पानी नहीं आ रहा है, जिसकी वजह से गाँव के लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।
अफसर -"देखो सरपंच साहब, मैं आप की बात बिल्कुल नहीं मान सकता कि आपके गांव में पानी नहीं आ रहा है।"
सरपंच- "क्यों नहीं मान सकते?"
अफसर - क्योंकि आप के गांव का दूध वाला मुझे हर रोज पानी मिला दूध दे कर जाता है।

श्री ओंकार मल अग्रवाल — जेन्टलमैन
श्री बालकिशन गोयनका (चैन्नई) — सेवाव्रती
श्री गणेश प्रसाद कन्दोई — ट्रान्सपोर्ट किंग
श्री राम अवतार पोद्दार — सर्वप्रिय
श्री आत्माराम सोंथलिया — वित्त मंत्री
श्री शंभु चौधरी — लीभ एप्लिकेशन
श्री ओम प्रकाश पोद्दार — सबके विवाह करा दूंगा
श्री संजय हरलालका — नई किरण
श्री सतीश देवड़ा — अरबिन्दो देवाय
श्री संतोष जैन — आस्था
श्री धर्मचन्द अग्रवाल — श्रीराम
श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल — राइजिंग स्टार
श्री नवल जोशी — काउंसिलर इन वेटिंग
श्री सूर्यकरण सारस्वा — रेस का घोड़ा
श्री सुभाष मुरारका — मस्ती
श्री रामदयाल मस्करा — बेगुसराय के राजा
श्री मौजीराम जैन — चुनाव अधिकारी
श्री सुबीर पोद्दार — किस्सा कुर्सी का
श्री राम पाल अग्रवाल 'नूतन' — गोरक्षा
श्री डॉ० श्यामसुन्दर हरलालका — असम के राजा

श्री अरुणकांत अग्रवाल — अभिनंदन
श्री हरीकृष्ण चौधरी — सेल्फमेड
श्री साधुराम बंसल — तीर्थयात्रा
श्री मोहनलाल चोखानी — समाज सुधार का दर्द
श्री इन्द्रचन्द्र संचेती — काफी हाऊस
श्री हरी प्रसाद बुधिया — शादी की पचासवीं वर्षगाँठ
श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल — शिक्षाप्रेमी

पतनी पति नै चिट्ठी लिखी - थारी याद में म्हैं १५ दिना में ही सरीर स्यूं आधी होगी। म्हनै कब लेवण आवोगा? पति रो पडूतर - १५ दिन पछै!

श्री श्रवण तोदी — कामरेड
श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल — न तीन में न तेरह में
श्री सज्जन भजनका — करलो दुनिया मुट्ठी में
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल (मोतीपुर) — बेटा बाप से भी गोरा
श्री मामराज अग्रवाल — राजभवन से राष्ट्रपति भवन
श्री महाबीर प्रसाद अग्रवाल — हर मर्ज की दवा
श्री विशम्भर दयाल सुरेका — अभिभावक
श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया (रांची) — मेरा प्रेसिडेन्ट
श्री विश्वनाथ मारोठिया — अल्बर्ट पिन्टू का गुस्सा
श्री जुगल किशोर जैथलिया — युगधर्म
श्री भानीराम सुरेका — झूठी कसम
श्री विश्वम्भर नेवर — मुकदमेबाज
श्री रघु मोदी — क्या बात है
श्री बी.के.पोद्दार — संगीत–ए–बहार
श्री बालकृष्ण डालमिया — मस्ती
श्री शांतिलाल जैन — पुरानी यादें
श्री शिवभगवान खेमका — यत्र–तत्र–सर्वत्र
श्री सुशील ओझा — ऑर्गनाइजर

क्या बात है पापा! आप हर नए साल बड़े-बड़े नेताओं को और अधिकारियों को ग्रीटिंग कार्ड भेजते हैं, जबकि वे लोग आप को जानते तक नहीं? दस साल के बेटे ने पूछा।
अरे तू नहीं समझेगा बिटवा ! मुझे जब इन कार्डों के जवाब में उन लोगों के धन्यवाद पत्र आते हैं तो मैं भी उस समय अपने आप को वी.आई.पी. समझने लगता हूँ। पिता ने मुस्कुराते हुए रहस्यमयी आवाज में बेटे को पते की बात बताई।

बुरा न मानो होली है

सीताराम शर्मा : खाकी वर्दी

श्री बसंत कुमार नाहटा — बदाम की कतली
श्री डूंगरमल सुरेका — न उधो का लेना न माधो का देना
श्री महेश कुमार सहारिया — नार्थ ट्रस्ट
श्री पद्म कुमार अग्रवाल — दवा बताता हूँ
श्री पी.के.लीला — ऑडिटर
श्री पवन जैन — मेल्ट डाउन
श्री महावीर नारसरिया — अभी भी जवान हूँ
श्री राजेश खेतान — खुद से परेशान
श्री कमल गाँधी — ऊँची छलांग
श्री हर्ष नेवटिया — विनम्रता की मूर्ति
श्री हरिमोहन बांगड़ — पैसा बोलता है

बेटा- "क्या बताऊँ पापा, सामने वाले मकान में एक लड़की हर रोज खिड़की में से रुमाल हिलाती है पर खिड़की का शीशा कभी नहीं खोलती।"
पिता- बहको मत बेटे, वह तुझे देख कर रुमाल नहीं हिलाती । दर असल वह उस मकान की नौकरानी है जो रोज खिड़की के शीशे साफ करती है।

श्री प्रेमचन्द सुरेलिया — एवरेडी
श्री अरुण गुप्ता — नई फसल
श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया — रियल एस्टेट
श्री पुष्कर लाल केडिया — कार्यकर्त्ता नरेश
श्री सज्जन सराफ — राजनीति
श्री अजय रुंगटा — गाईडेंस
श्री जे.पी.चौधरी — दुनिया मेरी मुट्ठी में
श्री संजय बुधिया — ब्लू गाइड ब्वाय
श्री राधेश्याम गोयनका — पंच परमेश्वर
श्री रवि पोद्दार — गंगा के किनारे
श्री महेन्द्र जालान — इण्डो फ्रेंच
श्री एन.जी.खेतान — माई लार्ड
श्री एन.आर.गोयनका — फोरन टूर
श्री रामनाथ झुनझुनवाला — लाल लाल गाल
श्री सुनील कुमार डागा — विदेश में छुट्टी
श्री सुरेश कुमार बागड़ी — अगली बार

मैनेजर साहब ! अब तो मेरी पगार बढ़ा दिजिए, क्योंकि मेरी शादी हो गई है। कर्मचारी ने निवेदन किया।
"नहीं, मिल के बाहर होने वाली किसी भी दुर्घटना के लिए हम जिम्मेदार नहीं है, मैनेजर ने मुसकुराकर जवाब दिया।"

श्री श्रीकृष्ण खेतान — फैन पावर
श्री राजेन्द्र बच्छावत — जगत सेठ
श्री जे.के.जैन — दोस्त दोस्त न रहा
श्री कुंज बिहारी अग्रवाल — होजियरी पार्क
श्री श्याम सुन्दर बगड़िया — साठे पर पाठा
श्री बाबूलाल धनानिया — हरियाणा नरेश
श्री बालकृष्ण माहेश्वरी — मानव सेवा
श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग — मंत्री जी
श्री ललित सकलचन्द्र गाँधी — आपकी बारी
श्री विजय कुमार मंगलुनिया — सीनियर
श्री बजरंगलाल नाहटा — मित्रता
श्री कैलाश मल दूगड़ — जी हाँ
श्री विजय कुमार गोयल — पर्दे के पीछे
श्री सोम प्रकाश गोयनका — हाजिर हूँ
श्री गोपाल सुतवाला — फुर्सत कहाँ
श्री पन्ना लाल वैद (दिल्ली) — दिल्ली का बादशाह
श्री गोविन्द शर्मा (हावड़ा) — परिपक्वता
श्री रामनिवास चोटिया (हावड़ा) — मैं साथ हूँ
श्री नारायण जैन — नई राह
श्री बंशीलाल बाहेती — चुनाव के मैदान में
श्री सांवरमल भीमसरिया — बीते दिनों की यादें

मरीज ने एक डाक्टर से पूछा आप ने दो-दो थर्मामीटर क्यो रखें हैं? डाक्टर ने जवाब दिया, एक मुँह में लगाने के लिए और दूसरा जेब में ।
मरीज, मैं आप का मतलब नहीं समझा !
डाक्टर! मतलब यह कि एक थर्मामीटर मुँह में लगाने से मुझे पता चलता है कि आप का शरीर कितना गर्म है और दूसरा जेब में लगाने से पता चलेगा है कि आप का जेब कितना गर्म है।

श्री पवन कुमार गोयनका (दिल्ली) — मैं हूँ ना
श्री लोकनाथ डोकानिया — कुर्सी की तलाश
श्री विश्वनाथ सुल्तानिया — सफल अध्यक्ष
श्री रामगोपाल बागला — मणे कोई पुछे ही कोणी
श्री श्यामलाल डोकानिया — सेवा परमोधर्म
श्री विश्वनाथ भुवालका — काम ही काम
श्री विजय कुमार गुजरवासिया — इन्सटेन्ट सोल्युशन

बुरा न मानो होली है

विजय कुमार गुजरवासिया : इन्सटेन्ट सोल्युशन

श्री विश्वनाथ सिंघानिया	सांस्कृतिक चेतना
श्री कृष्ण कुमार डोकानिया	इंसाफ का तराजू
श्री दिनेश बजाज	एकमात्र मारवाड़ी विधायक
श्री राजकुमार बोथरा	बम बोल
श्री मनोज पोद्दार	मैदान में उतरने की तैयारी
श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया	समाज सेवी
श्री श्यामानन्द जालान (कोलकात्ता)	रंग....मंच
श्री डॉ.जयप्रकाश मूंधड़ा	हर दिल अजीज
श्री दिलीप कु.मनसुखलाल गांधी	केन्द्रीय मंत्री
श्री चिरंजीलाल अग्रवाल	रिलीफ
श्री नथमल टिबड़ेवाल (पटना)	कुछ समझ में नहीं आता
श्री विनोद तोदी (पटना)	तेज रफ्तार
श्री संतोष सराफ	किसका भरोसा करें
श्री बनवारी लाल सोती	विन्डफाल
श्री मुकुन्द राठी	परचम
श्री गोविन्द राम अग्रवाल (धन्नाव़ाले)	सबका भला हो
श्री देवेन्द्र कुमार दूगड़	इंजीनियर बिजनेसमैन
श्री ओम लड़िया	रक्तदान
श्री जयगोविन्द इन्दौरिया	भाग दौड़

मोहन अपने दोस्त राकेश से कहता है, देखो दोस्त चूंकि हम लोकतंत्र प्रणाली पर विश्वास रखते हैं इसलिए हम ने अपने घर में सुख शान्ति बनाए रखने के लिए एक सिस्टम बनाया है । मेरी पत्नी वित मंत्री है। मेरी सास रक्षा मंत्री। मेरे ससुर विदेश मंत्री और साली लोक सम्पर्क मंत्री है।

राकेश- और आप शायद प्रधान मंत्री होंगे?

मोहन- नही यार, मैं तो जनता हूँ ।

श्री जुगल किशोर सराफ	मेरी सुनो
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (कोलकाता)	पीली आँखें
श्री नन्दलाल अग्रवाल	तौबा ये मतवाली चाल
श्री संदीप भुतोड़िया	वसीयत
श्री नरेश अग्रवाल(विश्वामित्र)	मेरी भी सुनो
श्री रोशनलाल धोणा	मददगार
श्री सुन्दर लाल कनोड़िया	जय हरियाणा
श्री कैलाश प्र.झुनझुनवाला,(पटना)	सम्मेलनिष्ठ

श्याम ने अपने दोस्त सुरजीत से पूछा, सुरजीत भाई, अपने घर के बाहर खड़े क्यों हो और यह चोटें कैसे लगी ?

सुरजीत- हुआ यूं कि...।

श्याम- कितनी बार कहा कि लोगों से झगड़ा मत किया करो। कमब्खत ने मार कर तेरा बुरा हाल कर दिया। बुरा हो उस का किड़े पड़े उसे..।

सुरजीत- बस बस मैं अपनी पत्नी के बारे में और गलत बातें नही सुन सकता।

श्री नन्दलाल सिंघानिया	उमंग
श्री दुर्गा प्रसाद नाथानी (कोलकात्ता)	समर्पित भाव
श्री चम्पालाल सरावगी (कोलकात्ता)	बाबा विश्वनाथ
श्री गोपी धुवालिया	लायन
श्री विश्वनाथ सराफ	हिसाब–किताब
श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी (जबलपुर)	नजर बचा के
श्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय (हैदराबाद)	लंबी छलांग
श्री कमल नोपानी (पटना)	चल भाई चल
श्री धर्मचन्द जैन "रा रा" (गांधी)	राही हम प्यार के
श्री रमेश कुमार गर्ग (जबलपुर)	नया जमाना
श्री रमेश कुमार बंग (हैदराबाद)	प्रात:प्रचार
श्री हरी प्रसाद अग्रवाल	नाच न जाने आंगन टेढ़ा
श्री आत्माराम तोदी	कार्यकर्ता
श्री अनिल शर्मा	कहाँ हो यार
श्री राजीव मोहश्वरी	नई राह की तलाश
श्री संतोष कुमार हरलालका	जय हो
श्री मदन गोयल	अभी मैं जवां हूँ
श्री नीलमणि राठी	कोई मेरी भी सुनो
श्री नन्द किशोर अग्रवाल	कामरेड
श्री अशोक काजड़िया (दुर्गापुर)	हम तुम्हारे साथ हैं

पत्रकार-साहित्यकार

श्री प्रकाश चन्द्र अग्रवाल	नई पहचान
श्री नथमल केडिया	पुरानी कहानी
श्री गजानन वर्मा	गीतों का सम्राट
श्री पद्म मेहता (राजस्थान)	राजस्थानी ज्योति
श्री डॉ.कल्याण मल लोढ़ा	साहित्य मनीषी
श्री कमल किशोर गोयनका (दिल्ली)	काम की बात
श्री हरीश भादानी (राजस्थान)	रेत'री पीड़ा